राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान

(जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग,
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार)

जलविज्ञान भवन, रूड़की - 247 667 (उत्तराखण्ड) भारत

National Institute of Hydrology

(Deptt. of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation
Ministry of Jal Shakti, Government of India)

Jalvigyan Bhawan, Roorkee-247 667 (Uttarakhand) INDIA

(An ISO 9001 : 2015 Certified Organization)

डा. सुधीर कुमार
निदेशक
Dr. Sudhir Kumar
Director

निदेशक की कलम से .....

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए संविधान में अनेक धाराओं एवं प्रावधानों की व्यवस्था की गई है । संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किए जाने के पश्चात् सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार संबंधी प्रयासों में काफी तेजी आई । आज खुशी इस बात की है कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में धीरे-धीरे ही सही लेकिन काफी हद तक सफलता मिल रही है । वर्तमान में कई वैज्ञानिक एवं अभियंता अपने शोध एवं विकास तथा तकनीकी कार्यों में राजभाषा हिंदी का यथासंभव प्रयोग कर रहे हैं । इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप आज विज्ञान तथा प्रोद्योगिकी क्षेत्र में भी तकनीकी कार्यों में हिंदी भाषा के प्रयोग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी कार्यों में हिंदी का प्रयोग एक ऐसा विषय है जिस पर वैज्ञानिक प्रकृति की कार्य संस्कृति वाले संस्थानों को विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है । इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान इस बार 17-18 अगस्त, 2023 को "जलवायु परिवर्तन एवं जल प्रबंधन" विषय पर 7वीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। संगोष्ठी की समूची कार्यवाही हिंदी में ही निष्पादित की जाएगी । कुछ लोगों का मानना है कि तकनीकी प्रकृति के कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग एक दुष्कर कार्य है परन्तु इस तरह के कार्यक्रम आयोजित कर राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान ने इस बात को गलत साबित कर दिया है । संस्थान का पूरा प्रयास है कि तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के माध्यम से हिंदी का यथासंभव प्रयोग सुनिश्चित किया जाए ।

इस संगोष्ठी में देश के भिन्न-भिन्न भागों से प्रतिभागी आ रहे हैं । संगोष्ठी में सम्मिलित शोध पत्रों के सारांशों को एक स्मारिका के रूप में संकलित किया जा रहा है जिसमें 77 शोध पत्रों को स्थान दिया गया है । प्रतिभागियों द्वारा अपने शोध पत्रों को पावर प्वांइट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा ।

मुझे आशा है कि हिंदी में आयोजित की जा रही यह संगोष्ठी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कारगर सिद्ध होगी तथा इसके आयोजन से तकनीकी लेखन को व्यापक प्रोत्साहन एवं बढ़ावा मिलेगा और यह जल संसाधन के क्षेत्र में कार्यरत समस्त विद्वतजनों के लिए सार्थक एवं उपयोगी होगी ।

मैं इस संगोष्ठी के सफल आयोजन की कामना करते हुए जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय, समस्त प्रतिभागीगण, आयोजनकर्ता तथा उन सभी व्यक्तियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस संगोष्ठी के आयोजन में सहयोग एवं सहायता प्रदान की है ।

जय हिंद !

(सुधीर कुमार)
निदेशक